21वीं सदी और हिंदी कथा साहित्य

संपादक

डॉ. पांडुरंग ज्ञानोबा चिलगर

सह-संपादक

प्रो. डॉ. नागराज उत्तमराव मुळे

वान्या पब्लिकेशंस, कानपुर

कानपुर - 208021 (उ.प्र.)

Scanned with OKEN Scanner

अनुक्रम

1. 'रुकोगी नहीं राधिका' उपन्यास में स्त्री विमर्श
प्रा. डॉ. शहाजी चव्हाण 9

2. 'फाँस' उपन्यास : किसान जीवन की दर्दकथा
डॉ. ज्ञानेश्वर गणपतराव रानभरे 14

3. 21वीं सदी के उपन्यासों में नारी विमर्श
प्रो. डॉ. बबन रंभाजीराव बोडके 22

4. आदिवासी एवं दलित विमर्श : तुलनात्मक अध्ययन
गौरव सिंह 26

5. 21वीं सदी का स्त्री विमर्शवादी हिंसा साहित्य : युगांतरकारी परिवर्तन का आधार
डॉ. प्रेरणा विलास उबाळे 34

6. 21वीं सदी और साहित्यकार नीरजा माधव 'व्यक्तित्व एवं कृतित्व'
अर्चना बलवंत देशमुख 41

7. 21वीं सदी के हिंदी कथा साहित्य में आदिवासी विमर्श
डॉ. राजू हमीरसिंह देसाई 47

8. 21वीं सदी के टेलीविजन धारावाहिकी में भारतीय नारी
जाकिर हुसैन 52

9. 'कठगुलाब' में असीमा की छवि
कृष्णा प्रिया जे.के. 55

10. शाह क्या सचमुच शाह नहीं रहेंगे 'चन्ना' कृष्णा सोबती
फरीदा खातून 58

11. हिंदी कथा साहित्य और विविध विमर्श
डॉ. बब्रुवान मोरे 63

12. पूर्वोत्तर भारत की जनजातीय जीवन एवं लोकसाहित्य
डॉ. नुरजाहान रहमातुल्लाह 71

13. 21वी सदी के हिंदी कथा साहित्य में आदिवासी विमर्श
डॉ. संग्राम सोपानराव गायकवाड 78

14. यमदीप : किन्नरों का यथार्थ आख्यान
डॉ. पी. डी. चिलगर 81

15. 21वीं सदी के हिंदी उपन्यास साहित्य में स्त्री विमर्श
प्रा. अमर आनंद आलदे 86

Scanned w... nner

ISBN : 978-93-91119-77-5
मूल्य : चार सौ पंचानवे रुपये मात्र

पुस्तक	:	**21वीं सदी और हिंदी कथा साहित्य**
संपादक	:	डॉ. पांडुरंग ज्ञानोबा चिलगर
सह-संपादक	:	प्रो. डॉ. नागराज उत्तमराव मुळे
©	:	महात्मा फुले महाविद्यालय, अहमदपुर
प्रकाशक	:	**वान्या पब्लिकेशंस** 3A/127 आवास विकास हंसपुरम्, नौबस्ता, कानपुर - 208 021 Email : vanyapublicationskanpur@gmail.com info@vanyapublications.com Website : www.vanyapublications.com Mob. : 9450889601, 7309038401
संस्करण	:	**प्रथम, 2022**
मूल्य	:	**495.00**
शब्द-सज्जा	:	रुद्र ग्राफिक्स, कानपुर
मुद्रक	:	सार्थक प्रेस, कानपुर

Scanned with OKEN Scanner

कागज वापस ले गर्व से भर जाती है– "वह शाह की धेवती है, शाह की शाख नहीं तो आज शाह की नातिन तो है।"[12]

'उपन्यास की अंतिम पंक्ति शाह नहीं तो आज शाह की नातिन तो है' जैसे वाक्या से कृष्णा सोबती ने 'क्या शाह सचमुच शाह नहीं रहेंगे?' जैसे प्रश्न का उत्तर दे दिया है। कृष्णा सोबती का मानना है कि जब तक किसान स्वयं अपने अधिकारों को नहीं जानेगा, अपने हक की लड़ाई न लड़ेगा –शोषण की यह अनवरत प्रक्रिया चलती रहेगी। रंगे हुए सियार की तरह जमींदारों का असल चेहरा सामने लाकर उन्होंने किसानों को सचेत करना चाहा है। किसान अगर अपने हक की पहचान नहीं करेगा तो सचमुच शाह शाह ही रहेंगे। वे अगर स्वयं नहीं रहेंगे तो उनकी जगह उनकी नस्लें उनका रक्त चूसने के लिए तैयार रहेंगी।

संदर्भ

1. सोबती कृष्णा, 'चन्ना', पहला संस्करण : 2019, राजकमल प्रकाशन, 1बी. नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली–110002, पृष्ठ संख्या –1
2. वही, पृष्ठ संख्या – 195
3. वही, पृष्ठ संख्या – 195
4. वही, पृष्ठ संख्या – 195
5. वही, पृष्ठ संख्या – 195
6. वही, पृष्ठ संख्या – 259
7. वही, पृष्ठ संख्या – 212
8. वही, पृष्ठ संख्या – 213
9. वही, पृष्ठ संख्या – 271
10. वही, पृष्ठ संख्या – 383
11. वही, पृष्ठ संख्या – 384
12. वही, पृष्ठ संख्या – 384

असिस्टेंट प्रोफेसर (विभागाध्यक्ष)
पंचकोट महाविद्यालय, पुरुलिया
पश्चिम बंगाल

41

शाह क्या सचमुच शाह नहीं रहेंगे 'चन्ना' कृष्णा सोबती

फरीदा खातून

साठोत्तर के दशक में लिखने वाले रचनाकारों में कृष्णा सोबती एक प्रमुख हस्ताक्षर हैं। कम किंतु अपनी प्रत्येक रचना द्वारा इन्होंने रचना जगत में हलचल मचा दी है। 'डार से बिछुड़ी', 'मित्रो मरजानी', 'ऐ लड़की', 'सूरजमुखी अंधेरे के' के बाद 'चन्ना' वर्ष 2019 में प्रकाशित नया उपन्यास है। हालांकि यह कृष्णा सोबती द्वारा लिखित पाँचवे दशक का उपन्यांस है किंतु इसका प्रकाशन हाल में ही हुआ है। इसकी भूमिका में वे लिखती हैं –

"मेरा यह पहला उपन्यास 'चन्ना' विभाजन के बाद लिखा गया। लेखक का पहला उपन्यास साधारणतया जरूरत से ज्यादा ही लंबा होता है। यह भी था और लैटर हेड पर लिखने का सुझाव पिताजी का था। चन्ना लिखते हुए मैं अपने को सचमुच 'लेखक' मानती थी। मुझ में कुछ ऐसा जज्बा था कि जैसे कोई ग्रंथ लिखा जा रहा हो।"[1]

कृष्णा सोबती ने आजादी पूर्व 'पंजाब की ग्रामीण धरती को अपने उपन्याास के कथा के लिए चुना है। हालांकि पूरे उपन्यास के कथ्य में 'चन्ना' के विकसित होते हुए व्यक्तित्व को केंद्र में रखा गया है किंतु इसके साथ ही पंजाब के खेतीहर समाज एवं शाहों के बनते–बिगड़ते संबंधों का आंकलन कर जमीनों पर शाहों का आधिपत्य, किसानों पर बढ़ते अत्याचार, उनके मध्य विद्रोह की हल्की आहट को भी चित्रित किया है। शाह जमीन के मालिक हैं। दूर–दूर तक फैले खेतों, कुँओं पर उनका अधिकार है। वे जमीन एवं उनसे जुड़े आसामियों पर अपना पुश्तै नी अधिकार समझते हैं। बाप–दादा के जमाने से उनके और किसानों के बीच लेन–देन है। इस लेन–देन में न तो शाह को कोई परेशानी है और न ही किसानों को कोई शिकायत। किंतु जब सरकार कानून बनाकर जमींदारों के अधिकार सीमित करने लगी तो शाहजी चिंतित हो गए। शाहजी अपने इलाके के आसामियों को समझाकर लौटते हैं, तब उन्हें